

किन-किन जगहों पर फिर बारिश की है संभावना

कई इलाकों में पूरी तरह बदलेगा मौसम

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी विभाग की संक्रियता के कारण पूरे देशभर में मौसम में बदलाव देखें को मिल सकता है। आईएमडी की माने तो, 27 फरवरी के बीच जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार पश्चिम बंगाल, ओडिशा समेत देश के कई हिस्सों में बारिश होने की संभावना है। रिपोर्ट की माने तो 25 से 27 फरवरी के बीच उत्तर पूर्वी राज्यों मौसम का पूरा हाल। उत्तर भारत के कई हिस्सों में बारिश होने की अधिक संभावना है तो वहाँ उत्तर भारत में और गत को हल्की बारिश के साथ मौसम साथ खत्म हो रहा है, आईएमडी



ऐसा होगा मौसम का हाल

मौसम का पूर्वानुमान लगाने वाली एजेंसी स्काईमेट ने कहा कि, पश्चिमी विभाग को उत्तरी पाकिस्तान के ऊपर एक चक्रवात के रूप में देखा जाता है तो वहाँ बारिश के अनुसार 26 फरवरी की अधिक संभावना है तो वहाँ उत्तर भारत में भी चक्रों में मौसम दिन में गर्म और गत को हल्की बारिश के साथ मौसम साथ खत्म हो रहा है, आईएमडी

यह शर्म की बात है कि जम्मू-कश्मीर में चुनाव कराने का निर्देश कोर्ट को देना पड़ा

उमर अब्दुल्ला



जम्मू, 25 फरवरी (एजेंसियां)।

कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि निर्वाचन आयोग के बजाय उच्चतम न्यायालय को जम्मू-कश्मीर में चुनाव के लिए निर्देश जारी करना पड़ा, जो "काफी शर्म की बात" है। नेशनल कॉर्फेस (नेकेस) के नेता ने जिक्र किया कि यह कहना कि सही नहीं है कि जम्मू-कश्मीर की सभी समस्याओं की जड़ अनुच्छेद 370 था। उन्होंने कहा कि अब उन क्षेत्रों में अतंकवादी

हमले हो रहे हैं, जो पूर्व में आतंकवाद मुक्त हुआ करते थे। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में विषय रूप से जम्मू राज्यी और पुंछ के पर्वतीय क्षेत्र शामिल हैं। यहाँ एवीपी नेटवर्क के 'आईडियाज ऑफ इंडिया' शिखर सम्मेलन के तीसरे संकरण में उन्होंने दावा किया कि अतीत की तुलना में वर्तमान सरकार के कार्यकल के दौरान घाटी में लक्षित हमलों में अधिक कश्मीरी पंथी मारे गए हैं।

अब्दुल्ला ने पूछा, "उच्चतम न्यायालय द्वारा तथा की गई समर्यासी पर भाजपा और भारत सरकार क्या करने जा रही है?" उन्होंने कहा कि अदालत ने कहा कि सिंतंत्र के अंत तक जम्मू-कश्मीर में चुनाव होने चाहिए। अब्दुल्ला ने कहा, "यह बहुत शर्म की बात है कि जम्मू-कश्मीर में चुनावों की घोषणा निर्वाचन आयोग या भारत सरकार के बजाय उच्चतम न्यायालय को करनी पड़ी।"



मंवई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में पिछले कुछ दिनों से छपति संभाजीनगर के सांसद इमित्याज जलील और अमरावती की सांसद नवनीत राणा के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चलाया की नाम नहीं ले रहा है। अपनी आलोचना की सांसद नवनीत राणा के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चुनाव लड़ने की चुनौती दी। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

अमरावती सांसद के बार पर इमित्याज बोले- 'मूर्ख से विवाद करने से अच्छा है कि अपनी हार स्वीकार कर लेनी चाहिए'

चाहिए। उधर, अमरावती सांसद नवनीत राणा ने एमआईएम प्रमुख असदुद्दीन औवेसी को चेतावनी देते हुए कहा कि अपने इस देश में रहना है तो 'जय श्री राम' कहना होगा। इसके बाद राणा और जलील ने एक टूसे पर अपेक्षा प्रत्यारोप लगाए। चुनावी मौसम में छपति संभाजीनगर के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

'ये नायूराम जैसे लोग हैं'

छपति संभाजीनगर के सांसद इमित्याज जलील के बार पर इसकी मांग है कि इस बारे में बात नहीं कर रहा है। लेकिन, ये महिला जिस तरह से बोलती है। मुझे बताया गया है कि नवनीत राणा एससी वर्ग से चुनी गई है। शब्दालाक वे संविधान को भूल गए होंगे क्योंकि वे बीजेपी की उम्मीदवारी चाहते हैं। जलील ने कहा है कि ये नायूराम जैसे लोग हैं।

क्या है पूरा मामला?

दरअसल, एमआईएम प्रमुख असदुद्दीन औवेसी ने सब के दोरान संसद में बोलते हुए केंद्र सरकार की जमकर आलोचना की तरह नीत राणा ने जबाब देते हुए शब्दालाक ने कहा, "वारारी मस्जिद जिंदाबाद, बाबरी मस्जिद जिंदाबाद" जैसे नारे भी लगाए। इस बीच सांसद नवनीत राणा ने एमआईएम प्रमुख औवेसी को जिक्र किया था कि यह बारे में बात नहीं कर रहा है।

पालघर में तेज रफ्तार एस्प्रू ने महिला मजदूर को रोंदा

पालघर, 25 फरवरी (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के पालघर जिले के शाहुपुर क्षेत्र के रायांवां में एक किसान के दौरान घायल गांव में गंधीरूप से खराब हुई इसके को लेकर एक बड़ी घटना सामने आई है, जहाँ एक खेत में छह लोक जलील के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। इस बीच उपर्युक्त आदानप्रदान के दौरान इसकी विवाद करने से अच्छा है कि अपनी हार स्वीकार कर लेनी चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

हालत में थे थे। लेकिन इलाज के दौरान घायल गांव में से भी तीन की मौत हो गई। वन विभाग के अमरावती के एसडीओ अजय सागर ने बताया कि यहाँ मौजूद सात में से 6 मोरों की मौत है चुनौती है, जबकि एक मोर का फिलहाल उपचार किया जा रहा है। सभी मोरों का धिवहत पशु निकित्सकों की टीम द्वारा पोस्टमर्टम कराया जाकर उनका तुरंत इसकी सुचना वन विभाग को दी। मोरों पर धूंचे वन कमर्चियों ने भी तुरंत राय्यों की चोपान की चेतावनी दी। अपनी अजय सागर के लिए एक बड़ी घटना हो गई है। इसके बाद गांव के दौरान घायल गांव के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

हालत में थे थे। लेकिन इलाज के दौरान घायल गांव में से भी तीन की मौत हो गई। वन विभाग के अमरावती के एसडीओ अजय सागर ने बताया कि यहाँ मौजूद सात में से 6 मोरों की मौत है चुनौती है, जबकि एक मोर का फिलहाल उपचार किया जा रहा है। सभी मोरों का धिवहत पशु निकित्सकों की टीम द्वारा पोस्टमर्टम कराया जाकर उनका तुरंत इसकी सुचना वन विभाग को दी। अपनी अजय सागर के लिए एक बड़ी घटना हो गई है। इसके बाद गांव के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

हालत में थे थे। लेकिन इलाज के दौरान घायल गांव में से भी तीन की मौत हो गई। वन विभाग के अमरावती के एसडीओ अजय सागर ने बताया कि यहाँ मौजूद सात में से 6 मोरों की मौत है चुनौती है, जबकि एक मोर का फिलहाल उपचार किया जा रहा है। सभी मोरों का धिवहत पशु निकित्सकों की टीम द्वारा पोस्टमर्टम कराया जाकर उनका तुरंत इसकी सुचना वन विभाग को दी। अपनी अजय सागर के लिए एक बड़ी घटना हो गई है। इसके बाद गांव के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

हालत में थे थे। लेकिन इलाज के दौरान घायल गांव में से भी तीन की मौत हो गई। वन विभाग के अमरावती के एसडीओ अजय सागर ने बताया कि यहाँ मौजूद सात में से 6 मोरों की मौत है चुनौती है, जबकि एक मोर का फिलहाल उपचार किया जा रहा है। सभी मोरों का धिवहत पशु निकित्सकों की टीम द्वारा पोस्टमर्टम कराया जाकर उनका तुरंत इसकी सुचना वन विभाग को दी। अपनी अजय सागर के लिए एक बड़ी घटना हो गई है। इसके बाद गांव के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। अपनी आलोचना का शब्दालाक देते हुए जलील ने कहा, "मैंने यूटर्न से एक अच्छी कहाना सुनी है। मूर्ख से विवाद करने पर घार लौटाकर कर लेने चाहिए।" आदमी कितना भी अच्छा क्यों न हो, कुते की तरह नहीं भौंक सकता।"

हालत में थे थे। लेकिन इलाज के दौरान घायल गांव में से भी तीन की मौत हो गई। वन विभाग के अमरावती के एसडीओ अजय सागर ने बताया कि यहाँ मौजूद सात में से 6 मोरों की मौत है चुनौती है, जबकि एक मोर का फिलहाल उपचार किया जा रहा है। सभी मोरों का धिवहत पशु निकित्सकों की टीम द्वारा पोस्टमर

संदेशखाली में हैवानियत !

आपातकाल जब ढलान पर पहुंचा था तब भारत में अत्याचार की घटनाओं की रिपोर्टिंग में अचानक धार महसूस की जाने लगी थी। पत्रकार सामंती अत्याचार और खुलासे आम शक्ति के दुरुपयोग की नयानक कहानियां रिकॉर्ड करने दूर-दराज के इलाकों में जाने लगे थे। उन खुलासों से राजनीतिक बदलाव भी हुए। इसके बावजूद दुनिया का सर्वश्रेष्ठ संविधान होने के बाद भी महिलाओं की तस्करी में कोई कमी नहीं आ रही है। बहरहाल, 'एट्रोसिटी जर्नलिज्म' अब इतिहास की बात हो गई है। सत्ता के दुरुपयोग के मामले अभी भी खोजी पत्रकारिता के विषय हैं। भारत-बांगलादेश सीमा पर सुंदरबन के एक क्षेत्र तंदेशखाली में एक व्यक्ति और उसके सहयोगियों के असीम आतंक के खुलासे ने स्थानीय आवादी के सब्र की सीमा तोड़ दी। राजनीतिक दबंगई का ऐसा उदाहरण कम ही देखने को मिलता है। राजनीतिक तंकरक्षण में 21वीं सदी के भारत में भी पुरानी शैली की अपराध फल-फूल रहे हैं। पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में अत्याचार की भवावह घटनाएं इसलिए संभव हो पाईं क्योंकि स्थानीय पुलिस-प्रशासन शाहजहां की उंगलियों पर नाचने लगा। उसने अपनी पारी की शुरुआत एकीपीएम नेता के रूप में की और 2011 में सत्ता परिवर्तन के बाद वह अपमता बनजी की तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) जिला परिषद सदस्य बन गया। शाहजहां कहने को तो कोलकाता में मंत्री पद संभालने वाले राजनीतिक आकाओं के नियंत्रण में था। इसलिए उसे हैवानियत करने की छूट मिल गई। वह पंचायत से लेकर विधानसभा और लोकसभा युवाव तक, स्थानीय मतदाताओं को डरा-धमाकर टीएमसी के पक्ष में बॉटिंग सुनिश्चित कराता रहा। राजनीतिक आकाओं के प्रति अपने द्विधित्वों को पूरा करने के बाद उसे स्थानीय पुलिस-प्रशासन को अपने कब्जे में लेने की छूट मिल गई। पुलिस के पास जो भी शिकायतें जाती थीं, पुलिस उस पर कार्रवाई से पहले शाहजहां या उसके प्रमुख गुंडों पर अनुमति मांगती थी। उनकी अनुमति मिलने के बाद ही पुलिस कोई कार्रवाई कर पाती थी, वरना नहीं। संदेशखाली में शाहजहां का शासन देश कारणों से सुर्खियों में आया है। पहला, डॉन की बंदी सेना ने 5 जनवरी को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी दल पर हमला किया और उसके अधिकारियों और सुरक्षा कमियों को गंभीर रूप से

यायल कर दिया। टाएमसा न पाश्चम बगाल में बड़ पमान पर हुए। पश्चान कार्ड घोटाले की जांच करने गई केंद्रीय एजेंसी पर स्थानीय लोगों को भड़काने का आरोप लगाया। इंडी पर हमले के बाद पता चल गया कि शाहजहां ने कितना अत्याचार किया है। महिलाओं ने गंभीर आरोप लगाए कि कैसे स्थानीय तृणमूल नेताओं ने अपनी यौन कुंठा मटाने के लिए शाहजहां के जरिए हवानियत का हो दें पार कर दिया। महिलाओं के साथ यौन अत्याचार के साथ-साथ किसानों की जमीन छड़पने की शिकायतें भी सामने आने लगीं। ऐसे गंभीर आरोपों के बाद भी ममता सरकार ने उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। राज्य सरकार ने दृढ़ता से सभी आरोपों को खारिज कर दिया। इससे पता चलता है कि चुनाव के दौरान 'मदद' के बदले अपराधियों को सौंपी गई राजनीतिक शक्ति का संदेशखाली इकलौता उदाहरण नहीं है। पछले कुछ दशकों में जैसा कि देश के बाकी हिस्सों में भी राजनीति और अधिक प्रतिस्पर्धी लेकिन 'सामान्य' हो गई है। लेकिन पश्चिम बंगाल में बर्बाद और हिंसक घटनाएं बहुत ज्यादा बढ़ गई हैं, खासकर बुनावों के दौरान। इससे पहले, 'प्रगतिशील' राजनीति का प्रणेता होने का दंभ भरने वाले कहा करते थे कि हिंसा और संघर्ष तो इस बात के बाबत है कि समाज में मंथन हो रहा है और गरीब अपनी आवाज बुलन्द करने लगे हैं। संदेशखाली में अपराधियों का राजनीतिक चोला उत्तर गो हवानियत और क्रूरता का नंगा नाच सामने आ गया। इसने 'भद्रजनों के बंगाल' की दावेदारी पर बड़ा काला धब्बा लगा दिया है।

कौन हैं ध्रुव जुरेल ? पिता कारगिल युद्ध के हीरो

इंग्लैंड के खिलाफ जारी चौथे टेस्ट में सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उत्तरे ध्रुव जुरेल ने भारत की पहली पारी में 90 रन बनाए। इससे पहले राजकोट टेस्ट में उन्होंने 46 रन की शानदार पारी खेली। ध्रुव ने अपने इस प्रदर्शन से क्रिकेट जगत में तहलका मचा दिया। 23 वर्षीय विकेटकीपर बल्लेबाज ने रांची टेस्ट में छह चौके और चार छक्के लगाकर इंग्लिश गेंदबाजों की जमकर खबर ली। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, डेब्यू सीरीज में ध्रुव के दमदार प्रदर्शन से टीम मैनेजमेंट काफी खुश है। माना जा रहा है कि धर्मशाला टेस्ट (7-11 मार्च) में उन्हें मौका दिया जा सकता है। उत्तर प्रदेश के आगरा में जन्म लेने वाले ध्रुव जुरेल के लिए इस मुकाम तक पहुंचना आसान नहीं रहा। उनके संघर्ष की कहानी युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणादायक है। 22 वर्षीय खिलाड़ी के पिता नहीं चाहते थे कि वह क्रिकेटर बने। वह बेटे को अपनी तरह देश की सेवा में समर्पित करना चाहते थे। दरअल, ध्रुव के पिता नेम सिंह सेना में थे, जिन्होंने कारगिल युद्ध में भाग लिया था। 2001 में ध्रुव ने जन्म लिया।

का जन्म हुआ। छोटी उम्र से ही वह क्रिकेटर बनना चाहते थे, लेकिन पिता से वह डरते थे। आर्मी स्कूल में पढ़ाई के दौरान उन्होंने तैराकी के कैप में भी जाना शुरू किया, लेकिन उन्हें स्विमिंग से ज्यादा क्रिकेट में रुचि थी। जब स्कूल में तैराकी की कक्षाएं चलती थीं तो ध्रुव क्रिकेट खेला करते थे। उन्हें क्रिकेट इतना पसंद आया कि उन्होंने तैराकी से अपना नाम हटाकर क्रिकेट में लिखा लिया। जब उनके पिता कोइसका पता चला तो वह काफी गुस्सा हुए, लेकिन बाद में मान गए। ध्रुव को जब बैट चाहिए था, तो उनके पिता ने बल्ला लाने के लिए अपने दोस्तों से 800 रुपये कर्ज लिया था। ध्रुव उन्नर प्रदेश के लिए 2022 के मंगा ऑक्शन में राजस्थान रॉयल्स (आरआर) ने 20 लाख रुपये में अपनी टीम में शामिल किया था। हालांकि, उन्हें पहला मौका आईपीएल 2023 में मिला। आईपीएल में ध्रुव ने 5 अप्रैल 2023 को गुवाहाटी में पंजाब किंग्स के खिलाफ बतौर इम्पैक्ट प्लेयर डेब्यू किया। अपने पहले ही मैच में उन्होंने 15 गेंद पर 32 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। इसके बाद से ही वह चर्चा में आ गए। ध्रुव ने अब तक 13 आईपीएल मैच खेले हैं, जिसमें 172.72 के स्ट्राइक रेट से 152 रन बनाए हैं और आईपीएल 2024 के लिए राजस्थान ने इस विस्फोटक विकेटकीपर बल्लेबाज को ट्रिनिंग किया।



अशोक भाटिया

लोकसभा चुनाव 2024 के देश में होने वाले आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर उत्तर प्रदेश में कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर लिया है। ऐसे में अब मायावती की समाजवादी पार्टी अकेले पड़ गई है। माना जा रहा है कि समाजवादी पार्टी - कांग्रेस के गठबंधन से एनडीए से ज्यादा नुकसान बसपा को उठाना पड़ेगा। इस बार के चुनाव में बसपा का प्रदर्शन 2019 के चुनाव से भी खराब हो सकता है क्योंकि प्रदेश में अब त्रिकोणीय मुकाबला होते नजर आ रहा है। गठबंधन की अटकलों पर लगाम लगाते हुए मायावती कई बार कह चुकी हैं कि उनकी पार्टी को कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बोट ट्रांसफर नहीं होते हैं। ऐसे में किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करने के लिए वह अटल है। ऐसे में उत्तरप्रदेश में क्लीन स्वीप के लिए निकली भाजपा को फायदा हो सकता है, क्योंकि भाजपा ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रालोद के साथ गठबंधन कर लिया है, वहीं पूर्वी उत्तर प्रदेश में ओम प्रकाश राजभर और अनुप्रिया पटेल के साथ गठबंधन किया है। ऐसे में साफ हो गया है कि इस बार उत्तर प्रदेश में त्रिकोणीय मुकाबला होने वाला है। दलित-मुस्लिम और पिछड़ों की आबादी वाली सीट पर भी भाजपा को फायदा हो सकता है। पिछले चुनाव की बात करें तो समाजवादी पार्टी और रालोद के एक साथ चुनाव लड़ने पर एनडीए को उत्तर प्रदेश में 64 सीट ही मिल पाई थी। वहीं समाजवादी पार्टी को 10 और बसपा 5 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। कांग्रेस सिर्फ रायबरेली सीट पर ही चुनाव जीत पाई थी जहां से सोनिया गांधी ने चुनाव लड़ा। अमेठी से राहुल गांधी भी चुनाव हार गए थे, अमेठी सीट पर स्मृति ईरनी ने कमल खिलाया था। वहीं साल 2014 की बात करें तो समाजवादी पार्टी - बसपा में गठबंधन नहीं होने से एनडीए को प्रदेश में 73 सीटें मिली थी। इस बार ऐसे क्यास लगाए जा रहे हैं कि कांग्रेस-समाजवादी पार्टी के गठबंधन से इन दोनों पार्टियों को कुछ फायदा हो सकता है लेकिन भाजपा कई तरह की योजनाएं भी चला रही हैं। ऐसे में भाजपा को लाभ मिलना तय है देखा जाय तो यह लोकसभा चुनाव मायावती की बहुजन समाज पार्टी के लिए करो या मरो की लड़ाई है। मीडिया ने हॉल ही में जब वोटरों से संपर्क किया तो सीतापुर के सिधौली कस्बे में एक चाय की दुकान पर बैठे हजारी रैदास कहते हैं कि वह और उनके गांव के लोग बहन मायावती को ही बोट देंगे। उन्हें इससे मतलब नहीं कि बसपा चुनाव जीतती है या नहीं लेकिन अगर वह हाथी को बोट नहीं देंगे तो बहन जी के पार्टी और कमजोर हो जाएंगी। इसलिए इस बार दलित मायावती के साथ जाएगा। गौरतलब है कि बसपा सुप्रीमो मायावती इस बात को बखूबी जानती है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। अगर इस बार उनकी पार्टी को झटका लगता है तो आने वाले चुनाव और भी कठिन हो जाएंगे। साल 2007 में उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव जीतने के बाद बसपा हर चुनाव में न सिर्फ हार रही है बल्कि उसका बोट प्रतिशत भी कम होता जा रहा है। अब बहुजन समाज पार्टी के लिए स्थितियां बेहद मुश्किल हैं और जमीन बहुत ही कमजोर हो गई है। अब उनके बोट बैंक को भी चुनौती मिल रही है। आजाद पार्टी के नेता चंद्रशेखर आजाद रावण दलितों के बीच एक नया चेहरा है और कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो अखिलेश यादव को उन पर काफी भरोसा है। चंद्रशेखर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के साथ खड़े हैं और इन दलों को लगता है कि उनके प्रभाव के कारण दलित बोट बसपा से कट कर गठबंधन के पक्ष में आ जाएगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति में चंद्रशेखर दलित बोटे पर पकड़ बना रहे हैं। चंद्रशेखर आजाद दलितों के बीच ठीक उसी अंदाज से अपनी पकड़ बना रहे हैं जैसे बसपा ने शुरूआती दिनों में बनाई थी। उनके तेवर उतने ही आक्रमक हैं और उनकी भाषा भी बही है, जो काशीराम के समय में बसपा की हुआ करती थी। उनके समर्थक भी यह दावा करते हैं कि बसपा सुप्रीमो मायावती का समय अब गुजर चुका है और चंद्रशेखर दलितों के नए और युवा नेता हैं। इस खतरे को मायावती समझ रही है और इसीलिए उन्होंने पार्टी को बांगडोर युवा चेहरे और अपने भरीजे आकाश को देने की घोषणा कर दी है। आकाश का चेहरा दलितों के बीच कितना असर डालेगा, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन इतना साफ है कि मायावती के तमाम प्रयोग अब तक असफल साबित हुए हैं। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि मायावती के इतने कमजोर होने के बावजूद दलितों का एक समूह यानि उनके सजातीय बोट बैंक पर बसपा की पकड़ मजबूत बनी हुई है। यही कारण है कि इतनी कमजोर स्थिति के बावजूद मायावती के साथ समझौता करने की चाहत रखने वाले दलों की कमी नहीं है और राजनीति में अभी भी वह एक धुरी बनी हुई है। उनका सजातीय मतदाता अभी भी उनके साथ बना हुआ है। यह तब है, जब पिछले 10 सालों में बसपा का बोट प्रतिशत 22 प्रतिशत से गिर कर लगभग 13 प्रतिशत तक पहुंच गया है। लेकिन यह मायावती का चमत्कार ही है कि अपने कट्टर समर्थक सजातीय मतदाताओं को किसी के भी पक्ष में ट्रांसफर कर सकती है। यही उनकी ताकत है और यही उनकी मजबूती का कारण भी है। यह अलग बात है कि एक समय पूरे दलित और पिछड़ों समाज की मजबूत नेता रही मायावती के लिए अब जमीन बहुत ही खुरुड़ी हो चुकी है और उनका ये प्रभाव अपने सजातीय मतदाताओं पर ही बचा है, लेकिन मायावती अच्छी तरह जानती है कि जब तक 13 प्रतिशत बोट उनके साथ रहेगा, तब तक वह राजनीति में मजबूत तो रहेंगी लेकिन निर्णायक नहीं। यही कारण है कि वह अब करो या मरो की लड़ाई लड़ रही हैं। अगर इस बार वह पिछले चुनाव के मुकाबले अपने को कहीं ज्यादा मजबूत साबित नहीं कर पाती है तो राजनीतिक स्थितियां उनके को बोट दे, देंगे लेकिन समाजवादी पार्टी है। बसपा का कैडर गांव गांव जाकर लोगों को समझा रहा है कि आंख बंद कर हाथी को बोट दें। अगर किसी दूसरी पार्टी के समर्थक समझाने आएं तो साफ-साफ कह दें कि वे 'बहन जी के समर्थक हैं' वैसे तो अभी भी बसपा की सारी राजनीति मायावती के चेहरे पर चल रही है और अपनी मायावती ही उसको मजबूती दे रही है। लेकिन वह धीरे-धीरे आकाश को भी पार्टी में स्थापित करती जा रही है लेकिन बसपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि उसके साथ मायावती का सजातीय मतदाता तो मजबूती से जुड़ा हुआ है, लेकिन दूसरे सामाजिक समीकरण में अभी भी उसके पक्ष में नहीं है।

सपा-कांग्रेस गठबन्धन—झूबते को तिनके का सहारा

राज सक्सेना

इसमें कोई शक नहीं है कि रामलला मन्दिर लहर के चलते उप्र में कांग्रेस और सपा अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही हैं। कांग्रेस के सामने तो अपने अस्तित्व का प्रश्न खड़ा हो गया है और वह अपने आपको उप्र में बनाये रखने या यूं कहें कि अपनी उपस्थिति मात्र दर्ज कराने के लिए अपनी अंतिम लड़ाई लड़ रही है। यही हाल सपा का भी है। वह भी कारसेवकों पर गोली चलाने और मुस्लिम तुष्टीकरण के आरोपों से सनी है और कमसे कम पिछले चुनाव के बाबर सांसद बचाए रखने के लिए हर जुगत भिड़ा रही है। इसलिए हर ओर से निराश होकर अब केवल मुस्लिम और कुछ यादव वोटों के सहारे यह दोनों दल अपनी लाज बचाने की लड़ाई लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। इन परिस्थितियों के चलते कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का गठबंधन हो चुका है लेकिन दोनों ही पार्टियां एक-दूसरे का वर्चस्व स्वीकार करने को कर्तव्य तैयार नहीं हैं। इसका आधास संयुक्त प्रेस वार्ता में स्पष्ट देखने को मिला जब किसी पार्टी के कार्यालय पर नहीं, एक होटल में प्रेसवार्ता सम्पन्न हुई। इस गठबंधन में कांग्रेस को सीटें भले ही वे मिली हों जिनमें से सात पर कभी सपा नहीं जीती और बाकी दस पर भाजपा की जीत का भारी अंतर रहा हो लेकिन शून्य की ओर जा रही कांग्रेस इसमें भी अपना फायदा देख रही है। गठबंधन न होने की स्थिति में मुसलमान वोट उप्र में सपा को ही जाता। ऐसे में गठबंधन होने पर कांग्रेस को इसका फायदा मिल जाएगा। वहीं समाजवादी पार्टी का जनाधार इससे कम हो सकता है, इसकी पूरी सम्भावना रहेगी। पिछले चुनावों पर नजर दौड़ाएं तो 2012 के चुनाव में कांग्रेस विधानसभा में अलावा कांग्रेस की अपेक्षा सपा अन्य सीटों पर ज्यादा मजबूत स्थिति में है। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भी सिर चढ़कर बोल रहा था। गठबंधन के बावजूद कांग्रेस 28 से सात सीटों पर आकर सिमट गयी। वहीं समाजवादी पार्टी 311 सीटों पर लड़कर 47 पर सीटें ही निकाल पायी। पिछले चुनाव की अपेक्षा उसकी 177 सीटें कम हो गयी थीं। इस गढ़बन्धन से सिर्फ कांग्रेस को ही संजीवनी मिल सकती है, जिससे वह उप्र में सांस लेती रहे। उप्र में कांग्रेस, अमेठी और रायबरेली के अलावा कहीं भी भाजपा के मुकाबले टिकती नजर नहीं आती। वर्तमान समय में रायबरेली की एकमात्र सीट ही कांग्रेस के पास है। प्रदेश में कांग्रेस का ग्राफ लगातार गिर रहा है। उप्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मात्र दो सीटें ही मिली थीं, वे भी रायबरेली और अमेठी में खाता खोले बिना। इस हिसाब से आकलन करें तो कांग्रेस की राजनीतिक हैसियत उप्र में दो लोकसभा सीटों से ज्यादा नहीं थी। ऐसे में सपा कांग्रेस को 17 सीटें देकर खुद का ही नुकसान कर बैठी जबकि जब संगठन ही मजबूत नहीं होगा तो सपा को कांग्रेस कितना मदद कर पाएगी, यह विचारणीय प्रश्न है। पहले भी कांग्रेस से गठबंधन का लाभ सपा को नहीं मिला था। कांग्रेस का पुराना वोट बैंक ब्राह्मण-मुस्लिम और सामान्य वर्ग के मतदाताओं को माना जाता रहा है।

मुस्लिम मतदाता पहले से ही सपा के वोट बैंक रहे हैं। कांग्रेस के वोटर माने जाने वाले ब्राह्मण और अन्य जातियों के लोग सपा उम्मीदवारों को वोट देंगे इसकी उम्मीद बहुत कम है। जहां पर सपा का उम्मीदवार होगा वहां पर ब्राह्मण और सामान्य वर्ग के मतदाता निश्चित रूप से भाजपा को वोट कर सकते हैं। वहीं, सपा के वोटर माने जाने वाले यादव और अन्य पिछड़ी जातियां कांग्रेस को वोट करेंगी इसमें भी दुविधा है क्योंकि बीजेपी के कई नेता यादव हैं और उप्र में भाजपा, सपा के अलावा कांग्रेस की अपेक्षा सपा अन्य सीटों पर ज्यादा मजबूत स्थिति में है। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में रायबरेली में सपा चार सीटें जीती थीं तो अमेठी में तीन सीटों पर सफलता मिली थी। प्रयागराज, सहारनपुर, बांसगांव, अमरोहा, वाराणसी, बाराबंकी और रायबरेली के बाद मुस्लिम बोटरों का रुद्धान सपा की तरफ ज्यादा बढ़ा है। अगर कांग्रेस के बिना सपा मैदान में उत्तरती तो भी मुस्लिमों का वोट उसे ही मिलता। अर्थात कांग्रेस अब सपा के बोटरों के साथ मुस्लिमों का भी वोट हासिल करने की कोशिश करेगी। अगर सपा के बोटर जैसे यादव और अन्य जातियां कांग्रेस को वोट देंगी तो वह कई सीटों पर बीजेपी का सामना करने की स्थिति में होगी। सपा से गठबंधन करके कांग्रेस को ठीक वैसे ही फायदा मिल सकता है जैसे कि 2019 के लोकसभा चुनाव में बसपा को मिला था। लेकिन सपा को बसपा के वोट नहीं मिले। अखिलेश यादव के साथ भीम आर्मी चौफ चंद्रशेखर समेत अन्य छोटी-छोटी पार्टियों के कई नेता हैं।

ऐसे में माना जा रहा है कि इन छोटी पार्टियों को भी कुछ सीटें सपा देगी ही। अभी हाल में ही राजा भैया की पार्टी से भी सपा की नजदीकी बढ़ी है। सपा को राजा भैया के लिए प्रतापगढ़ समेत कुछ सीटें छोड़ी गई हैं, वहीं अपना दल कमेरावादी भी सपा से कुछ सीटें लेना चाहेगी। समाजवादी पार्टी ने जो 17 सीटें कांग्रेस को दी है उनमें से कुछ सीटों पर उम्मीदवारों के नाम का ऐलान भी किया जा चुका था जबकि कुछ सीटों पर सपा के आश्वासन प्राप्त संभावित उम्मीदवार भी क्षेत्र में लगातार सक्रिय थे। ऐसे में कुछ नेता नाराज होकर किसी दूसरी पार्टी में भी जा सकते हैं। अखिलेश के लिए पार्टी टूटने से बचाने की भी एक बड़ी चुनौती होगी।

उपर बन बगाल के उत्तर पार्ड भागलामी ने जा-जा बताया उनको कहने और लिखने में भी शर्म महसूस हो रही है। राज्य के 24 उत्तरी परगना जिले में हिंसा को लेकर बंगाल के राज्यपाल भी राज्य के कानून व्यवस्था पर सबल खड़ा कर चुके हैं। राज्यपाल सीबी आनन्द बोस ने सन्देशखाली में अशान्त क्षेत्रों का दौरा किया और तृणमूल कांग्रेस के फरार नेता शेख शाहजहां और उसके साथियों पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली महिला प्रदर्शनकरियों से बात की। इस दौरान राज्यपाल ने महिलाओं को आश्वासन दिया कि उनकी कलाई पर राखी बान्धने वाली महिलाओं पर भीषण अत्याचार के जो समाचार वहां से आ रहे हैं उनको सुन कर तो एक बार तालिबानी और आईएस सरीखे आतंकी संगठन भी शर्मसार हो जाएं। यह और भी शर्मनाक है कि सुश्री ममता बैनर्जी जैसी एक महिला मुख्यमंत्री के शासन में ये सब कुछ हो रहा है जो अपने आप को बंगाल की शेरनी कहलाना ज्यादा पसन्द करती है। बीते कुछ दिनों से सन्देशखाली हिंसा की आग में झुलस रहा है। यहां का पूरा मामला प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई के बाद लोगों के सामने आया है। पिछले माह 5 जनवरी को निदेशालय के अधिकारी राशन भ्रष्टाचार मामले में सन्देशखाली के सरबेड़िया में तृणमूल नेता शेख शाहजहां से पूछताछ करने पहुंचे। सत्ताधारी दल के कार्यकर्ताओं की मदद से न सिर्फ उनका नेता शाहजहां शेख फरार हो जाने में सफल रहा बल्कि इस दौरान सरकारी अधिकारियों पर हमले भी किए गए।

अपना संवैधानिक दायित्व निभाने की बजाय सुश्री ममता बैनर्जी इस मामले में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी को भी खोन्च लाई हैं और इन संगठनों को लेकर तरह-तरह के उपहासपूर्ण आरोप लगा रही हैं। केवल सत्ताधारी ही क्यों, अंतरात्मा उन संगठनों की भी गिरफ्तारी हो रही है।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्र

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा पर ऐसा लगाया

सकता है, लिकिन बुद्धि मद पर ऐसे ऐनक शायद ही मिलते यह बात मुझे तब समझ में आर्त जब मैं टी.वी. पर विज्ञापन देख हूँ। ये विज्ञापन भी यूपीएसएसी सवाल हो चले हैं। विज्ञापन उ का होता है और मैं कान समलगता हूँ। विज्ञापन देखना समझना भी एक कला है। सबके बस की बात नहीं विज्ञापनकर्ता सीधे-सीधे कोई च दिखाने-समझाने के लिए राजी नहीं है। जब देखो तब अन पहली की तरह विज्ञापन चला र

कैसे-कैसे विश्वापन

आँखों
रोशनी कम है
पर ऐसी

लगाया न बुद्धि मंद प्रयद ही मिलते समझ में आर्त विज्ञापन देखनी यूपीएसएसी हैं। विज्ञापन ३ मैं कान समझ विज्ञापन देखना ३ कला है। बात नहीं सधी-सधी कोई चुक्के के लिए राजी रखो तब अन्य विज्ञापन चला

ती है। विज्ञापन भी बड़े गजब-गजब के ने होते हैं। पहले कुछ सेकंड तक क टूरिज्म का प्रचार प्रसार सा लगने ता वाला विज्ञापन आगे चंद सेकंडों में ने सूट-बूट पर आ जाता है। अंत में है तो पता चलता है कि यह विज्ञापन न तो टूरिज्म का था और न ही सूट- है बूट का, बल्कि यह तो किसी गुटखे ता का ताम-झाम था। विज्ञापन को के समझने में सिर खुलते बैठ जाते न हैं और उधर इस तरह के एक से ने बढ़कर एक विज्ञापन चलते रहते हैं। रे कोल्ड ड्रिंक के विज्ञापनों का कहना है। इन्हें पीने का मतलब मौत ह। कोल्ड ड्रिंक के विज्ञापनों की चिंपाजी की तरह बिल्डिंगों फांद रहे हैं। कहीं तार पर लटक रहे हैं। कहीं

हाई जंप लगा रहे हैं। मात्र एक बोतल के लिए ओलंपिक्स के सारे गेम खेल डालता है। कभी-कभी तो लगता है कि ऐसे चिंपांजियों को ओलंपिक्स में मेडल की जगह कोल्ड ड्रिंक की एक बोतल दिखाती जाए तो ऐसे ही 20-25 मेडल छाटकर ले आएँ। बेफिजल में इतना बड़ा कुनवा भेजने और पैसे की बर्बादी से बचा जा सकता है वह तो भला हो कि ओलंपिक्स इंसानों के लिए होता है, ऐसे जानवर चले जाते तो ओलंपिक्स, ओलंपिक्स नहीं तमाशे का चिड़ियाघर बनकर रह जाता। उधर एक और विज्ञापन है जो यह दाव करता है कि उसका कपड़ा पहनने से आप मिस्टर परफेक्ट बन जायेंगे।

खरबों का पैसा लुटाने पर भी ए अदद अच्छा इंसान बनाना तो त तमीज के गुर सिखाने में कामय नहीं हो पाएँ। दुर्भाग्य से मिस्परफेक्ट बनाने वाले कंपनी व मालिक खुद घर से दरबदर गया। वह दुनिया को परफेक्ट बन चला था और खुद इनपरफेक्ट बनकर रह गया। उसी तरु फुसफुसिया डियोडेटों का कहना क्या। पहले तो वे फुसफुसिया मिलते नहीं, जिसे छिड़कते मक्खियों की तरह कन्याएँ सं काम-धंधे छोड़ एक मानुष की दें पर पिल पड़ती हैं। एक हम हजारों ऐसे स्प्रे खुद पर छिड़क देख लिए मजाल की कोई लड़की तो दूर कोई मक्खी आई हो।

और आदिवासी महिलाओं की बातें हर किसी को अन्दर तक झक्झोरने वाली हैं। इन महिलाओं ने वहां के तृणमूल नेता शेख शाहजहां और उनके साथियों पर यौन उत्पीड़न व जमीन हड्डपने के आरोप लगाये। आक्रोशित महिलाओं और लोगों ने शाहजहां के करीबी नेता शिबू हाजरा व उत्तम सरदार के खेत और मुर्गीखाने व घरों में आग भी लगा दी। आरोप है कि स्थान गांव के लोगों की जमीन छीनकर उस पर अवैध तरीके से यह मुर्गीखाना बनाया गया है। ये कई तरह के अवैध कार्यों का केन्द्र भी था। महिला आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति जनजाति

नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर में दोज होता है चमत्कार

हर भोर शिवलिंग पर चढ़े मिलते हैं फूल, बंद कपाट में कौन करता है पूजा



भारत कई धर्म और आस्थाओं का केंद्र है। दुनिया के सभी धर्मों में चमत्कार की कहानियां सुनने को मिल जाती हैं। इमें कुछ चमत्कारों की कहानियां किंवदन्तियों के तौर पर एक से दूसरी पांच तक पहुंचती हैं तो कुछ आज भी हाने वाले रहस्यमय कामों के बजाए हैं। ऐसे ही एक चमत्कार की कहानी मध्य प्रदेश के विदिशा में जंज बसीदा तहसील के उदयपुर गांव में महादेव के मंदिर से भी जी जड़ी है। मान्यता के अनुसार, उदयपुर गांव के नीलकंठेश्वर मंदिर में जब हर सुबह कपाट खोले जाते हैं तो पुजारियों और सेवकों को शिवलिंग पर कुछ ऐसा मिलता है जो किसी चमत्कार से कम नहीं माना जा सकता है।

मंदिर के शिवर पर दिखती आदमी की आकृति का क्या है राज

नीलकंठेश्वर मंदिर से जुड़ी एक दूसरी मान्यता भी है। लोगों का मानना है कि इस चमत्कार को एक ही व्यक्ति ने रातों रात बनार कैरायर कर दिया था। वह व्यक्ति नियम पूरा पर मंदिर की चोटी से उत्तर की नीचे आ गया था। तभी उसने ध्यान दिया कि उसका झोला ऊपर चोटी पर ही रह गया था। वह झोला उत्तराकर लाने के लिए फिर ऊपर चढ़ा। लोकन, वह नीचे उत्तर पाता, उससे पहले ही मुर्गे ने बांग दे दी। ऐसे ही व्यक्ति ने रातों रात बनार कैरायर के शिखर पर आज भी उस व्यक्ति का आकार देखा जा सकता है।

मुगलों ने बाहर की प्रतिमाओं को नष्ट करने की कोशिश की

राजा उदयादित्य की नगरी में उदयपुर अब छोटी सी जगह में सिमट कर रहा है। नीलकंठेश्वर मंदिर में महाशिवरात्रि पर भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने भी भूल-लौट कर मंदिर के रेलवे स्टेशन से महज 22 किमी की दूरी पर उदयपुर गांव में है। यह मंदिर बेजोड़ शिल्प का प्रतीक है। मंदिर को बनावट भोपाल के पास खोले जाने हैं तो महादेव के चरणों में फूल चढ़ा मिलता है। बता दे कि नीलकंठेश्वर मंदिर में रात को प्रवेश पूरी तरह प्रतिवंधित है।

नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर, मंदिर में चमत्कार, शिव मंदिर में चमत्कार, आल्हा ऊदल की कहानी, धर्म, भगवान शिव, महादेव, विदिशा, मध्य प्रदेशमान्यता है जो कि बुद्धेश्वर के सेनापति आल्हा और ऊदल हर रात महादेव की पूजा करते आते हैं।

सूर्य की पहली विण करती है शिवलिंग का अधिष्ठक

मंदिर का मुख्य द्वार इस तरह से बना हुआ है कि सूर्य की पहली विण करण महादेव का आधिष्ठक करता है। यहां हर महाशिवरात्रि पर 5 दिन का मेला लगता है। मुख्य मंदिर मध्य में बनाया गया है। इसके नीचे की गोलाई 5.1 फुट और चौकोर की गोलाई 6.7 फुट है। वहीं, जिलेहरी 22.4 फुट की है। मंदिर में गणेश जी, भगवान नटराज, महिषासुर मर्दिनी, कार्तिकी भगवान की मूर्तियां भी हैं। इनके अलावा स्त्री सौदैय के प्रदर्शन करती मूर्तियां भी हैं।

इनके अलावा ही भगवान के प्रदर्शन करती मूर्तियां भी हैं।



मांसाहारी बने रहे और अहिंसा पर प्रचार करते रहे

जाएगा मोक्ष। तुम्हारे साधु-संत सिर्फ तुम्हें सांत्वना दे रहे हैं। और सांत्वना के बदले में तुमसे सकार ले रहे हैं, तुमसे सम्मान ले रहे हैं।

प्रेम को समझो, उसका अर्थ समझो। प्रेम का अर्थ क्या होता है? प्रेम के तीन अर्थ होते हैं।

प्रथम के तीन अर्थ होते हैं। पहला अर्थ किंतु करने की तीन अर्थ होते हैं।

तुम्हारे साधु-संत तुमसे वही कहे चले जाते हैं जो तुम्हें प्रीतिकर लगे और जिंदगी में तो नहीं कहा कि मासाहार छोड़ दो, क्योंकि तब तो प्रीतिकर न लगता है। देखकर लगता है कि मुगलों ने आक्रमण के समय इन प्रतिमाओं को नष्ट करने की पूरी कोशिश की होगी।

तुम्हारे साधु-संत तुमसे वही कहे चले जाते हैं जो तुम्हें प्रीतिकर हम कहते हैं: प्रेम में मिराना, फलिंग इन लव। वह गिरना ही है। वस्तुतः गिरना है। जब कोई प्रेम में गिर जाता है, तो उसका अर्थ क्या होता है?

उसका अर्थ होता है कि उसने अपनी राम-हरि, राम-हरि की कोई भिन्न किरण की तीन अर्थ होते हैं।

तब तो और राजनीति के हजार गणित बिठाने थे। अब मरते वक्त राम-हरि, राम-हरि के कह लो! और बस राम-हरि, राम-हरि कह लिया कि पहुंच गए हुआ, जिसका तुमने बड़ा सुदर

नहीं कर सकते। उस पर तुम कुद्द ही होगे। इसलिए पति अपनी राम-हरि की तीन अर्थ होते हैं।

कारण पन्ती नहीं है, न पति है, कारण तुक्करी निर्भात है।

कोई नहीं चाहता कि अपनी आत्मा को बेचे और गुलाम हो जाए।

मगर जिसको तुम प्रेम कहते हो वह ऐसा ही प्रेम है कि उसमें आत्मा बेची पड़ती है और गुलाम होना पड़ता है। और तुम जिसके गुलाम होते हो, वह तुक्करा गुलाम हो रहा है। यह एक पारस्परिक गुलाम है। पति पत्नियों को गुलाम कर रही है। यह एक दूसरे पर गुलामी थोपी जा रही है। और दोनों की आत्माएं मरती हैं। और दोनों की आत्माएं परिवर्ती हैं।

जिसको तुमने कुभी क्षमा निर्भर हो, उसको तुम कभी क्षमा

दौलत और शोहरत पाने के बाद भी मनुष्य रह जाता है धन का प्यासा

सिंकंदर भारत आया तो उसने सुना यहां बड़े-बड़े योगी रहते हैं। एक योगी उसे बड़ा प्यासा करने वाला लगता है।

एक दिन योगी ने सोचा वह सिंकंदर मेरी बहुत सेवा करने लगा है।

उसने पूजा-सिंकंदर तुम्हारी इच्छा क्या है?

सिंकंदर ने जब यह देखा कि योगी प्रसन्न है तो हाथ जोड़कर लगाया।

“योगीराज यदि आप कोई अद्वितीय किंतु करने की तीव्रता होती है तो ऐसा करने की तीव्रता होती है।

योगी ने कहा जो एसा भी कर सकता है।

योगी ने तो जाते हैं कि उसने अपनी प्रसन्नता को दूर कर दिया।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

धन-दौलत से मनुष्य की कभी भरती नहीं होती, जिसका जातना है।

धन-दौलत से भरती होना चाहता है।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हुए कहा, “यह भरती नहीं होती।

सिंकंदर ने कहा- अनाज से क्यों योगीराज, यह मनुष्य रहोपड़ी है सिंकंदर।

योगी ने हंसते हु

पत्नी मीरा से झगड़े के बाद परेशान हो जाते हैं शाहिद कपूर, 15 दिनों तक बंद रहती है बातचीत

बालीवुड के टॉप एक्टर अमिनी शाहिद कपूर आज अपना 43वां जन्मदिन मना रहे हैं। इन दिनों वह अपनी हालिया रिलीज़ फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' को लेकर सख्तीयों में बने हुए हैं। फिल्म को दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। इस फिल्म में पहली बार अभिनेता कृति सेनन के साथ रोमांस करते हुए नजर आए हैं। शाहिद ने 2015 से मीरा राजपूत के साथ शादी रचाई थी। अभिनेता ने एक बातचीत के दौरान अपने और मीरा के झगड़ों पर बात की थी। उन्होंने बताया था कि उनका झगड़ा कितने दिनों तक चलता है।

नेहा धूपिया के चैट शो में शाहिद कपूर ने अपने और मीरा राजपूत के रिश्ते पर बात की थी। उन्होंने बताया था कि हर दूसरे



कपल की तरह उन दोनों के बीच भी झगड़े होते हैं, लेकिन यह करीब 15 दिनों तक चलता है। अभिनेता ने बताया, 'बह मेरा और मेरी पत्नी का झगड़ा होता है, तो मैं इससे सचमुच परेशान हो जाता हूं। इससे उबरने में मुझे काफी समय लगता है।'

शाहिद कपूर ने आगे कहा,

मैं हम दोनों कुछ महीनों में एक बार लड़ते हैं। हमारी लड़ाई हर रोज नहीं होती है, लेकिन हमारी लड़ाई जब भी होती है, बहुत लंबे समय तक चलती है। कभी-कभी यह 15 दिनों तक भी चलती है।'

मीरा राजपूत और शाहिद कपूर ने वर्ष 2015 में अरेंज मैरिज की थी। शाहिद को पहली मुलाकात

में ही मीरा पसंद आ गई थीं। वहीं, मीरा ने शाहिद को शादी के लिए हां कहने में करीब छह महीने लगा दिए थे। दोनों की उम्र में करीब 13 साल का अंतर है। पिछले साल जुलाई में शाहिद और मीरा ने अपनी शादी की 8वीं शादी सालगिरह मनाई थी।

शाहिद कपूर के वर्कफ्रेंट की बात करें तो इन दिनों वह 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में नजर आ रहे हैं। इस फिल्म शाहिद के साथ कृति सेनन मुख्य भूमिकाएं में हैं। फिल्म में वैज्ञानिक और रोबोट की प्रेम कहानी दिखाई रही है। यह फिल्म 9 फरवरी को रिलीज हुई है। इसके अलावा वह फिल्म 'देवा' में नजर आने वाले हैं। यह फिल्म इस साल दशहरा के दिन सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी।

शाहिद कपूर ने आगे कहा,

करियर के 50वें साल में रोमांचक भूमिकाएं पाकर खुश हैं शबाना आजमी, साझा किए कई किस्से

हिंदी सिनेमा की दिग्गज अभिनेत्री शबाना आजमी, राजस्थान रसोई के निर्देशन में बन रही फिल्म 'लाहौर 1947' में नजर आएंगी। वे सभी दो आलू और प्रीति जिंटा के साथ काम करेंगी। अब हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान शबाना आजमी ने सेट जैवियर्स में अपने दिनों, एफआईआर और अपनी शुरुआती भूमिकाओं के बारे में बात की। शबाना ने बताया कि कैसे अपने करियर के 50वें साल में उन्हें एक बार फिर उस तरह की भूमिकाएं मिल रही हैं। मेरे करियर के दौरान मैं मुझे इतनी अच्छी और विविध भूमिकाएं मिलीं, जिसे पहले मैं कभी नहीं सोच सकती थी कि मुझे इतने अलग रोल मिलेंगे। मुझे लगता है कि एक बार भूमिकाएं मिल रही हैं। मैं जिसका उन्हें कभी उपीद नहीं है। यह एक बार जैवियर्स की ओर आया है।

शबाना आजमी ने उन्हें मिल रही भूमिकाओं को लेकर उत्सुक जताया। उन्होंने कहा कि उन्हें कहा कि उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे इन भूमिकाओं में बहुत दिलचस्पी है। मेरे करियर के 50वें साल में एक नया सिलसिला शुरू हो गया है, जो मेरे करियर को लेकर है। मेरे करियर के दौरान मैं मुझे इतनी अच्छी और विविध भूमिकाएं मिलीं, जिसे पहले मैं कभी नहीं सोच सकती थी कि मुझे इतने अलग रोल मिलेंगे। मुझे लगता है कि एक बार भूमिकाएं मिल रही हैं। मैं जीवन के उसे पड़ाव पर हूं, जहां मुझे कोई भूमिका करने की जरूरत नहीं है, इसलिए जब मुझे कोई भूमिका चुनौतीपूर्ण लगती है तो मैं मुझे महसूस करता हूं और उसपर मैं खिलाफ़ डायरेक्टर हूं और जब मैं हमने अपने करियर में फिरज खान द्वारा निर्देशित 'तुम्हारी अमृत' में एक साथ काम किया था।



निर्देशकों ने उनकी कला और अभिनय की सराहना की और अभिनेत्री ने भी इन निर्देशकों से सीखी।

फालूक शेख को किया था

अपने सह कलाकारों के बारे में बात करते हुए शबाना आ गई। शबाना ने बताया कि जब उन्होंने सेट जैवियर्स कॉलेज में दाखिला लिया तो उन्हें पाता चला कि कॉलेज में काइरो और फालूक शेख ने हिंदू नाट्य मंच बनाने का फैसला किया।

फालूक शेख के साथ अपनी दोस्ती के बारे में बात करते हुए शबाना आ गई। शबाना ने अपने करियर के अन्त फिल्से भी साझा किए। जब दोस्ती के बारे में बात की जाती है तो उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी उपीद नहीं है। यह एक साथ दो भूमिकाएं पेश की तो उन्होंने अपने करियर की ओर आया है। यह एक साथ दो भूमिकाएं को लेकर है। यह एक साथ दो भूमिकाएं को लेकर है। और जब मैं हमने अपने करियर में फिरज खान द्वारा निर्देशित 'तुम्हारी अमृत' में एक साथ काम किया था।

बिपाशा 'सच' बोलती है : करण ग्रोवर

हाल ही में 'फिल्म' फाइटर' में नजर आया करण सिंह ग्रोवर ने एक इंटरव्यू की ओर अपनी पत्नी बिपाशा बसु को बताया कि वह अब दोबारा उसके साथ काम नहीं करना चाहती और उन दोनों के फिर से एक साथ अभिनय करने की ओर चाहती है।

करण ने कहा, वह मेरे साथ काम नहीं करना चाहती क्योंकि बिपाशा का कहना है कि वह मुझे घर के साथ ही काम पर भी नहीं संभाल सकती। वह अपने काम को लेकर फोकस्ड रहना और केवल खुद पर ध्यान देना चाहती है। वह काम को लेकर बहुत सीरियस है, उसका मानना है कि अगर मैं वहां रहूँगा तो उसका सारा ध्यान मेरे पर होगा।'

करण ने कहा, उसे 'फाइटर' बहुत पसंद आई। वह इंटरव्यू के दोबारा रोने लगी थी।



उसे पहले से ही फिल्म की कहानी के बारे में पता था, इसके बावजूद वह अपने इमोशंस को रोक नहीं सकती। मैं फिल्म में था और मैं भी रो रहा था। हालांकि, वह खुश थी और उसने कहा कि उसे मुझ पर गर्व है और जिस तरह मैंने अपने करिदार को नियोजित किया वह उसका चाहता है। परंतु उसने से पहले दोनों ने काफी समय तक एक-दूसरे को डट किया था। 2022 में उनकी एक बीटी हुई जिसका नाम उन्होंने देवी वासु सिंह ग्रोवर रखा है, लेकिन

वह ऐसी है कि बातों को फिल्टर नहीं करती, बाल्कि जो जैसा है, उसे वैसा ही बताती है। करण ने आगे कहा, अगर उन्हें लगता है कि इस बात से अपको दुख होगा तो भी वह उसे 'शुगरकोट' नहीं करेंगी। वह आपको बिल्कुल सटीक बातोंपैर कि आखिर सच क्या है जो आपको जानना चाहिए। वह मुंहफट नहीं बल्कि इसका मामले में थोड़ी कुर्कुरी कर जरूर है। अगर वह कुछ कह रही है तो मतलब है कि वह सच ही है और उन्होंने उसे उसी तरह महसूस किया है।

करण और बिपाशा की शादी को 7 साल हो चुके हैं। पति-पत्नी ने बिल्कुल इंशानी के साथ नहीं लेकिन उन्होंने से पहले दोनों ने काफी समय तक एक-दूसरे को डट किया था। 2022 में उनकी एक बीटी हुई जिसका नाम उन्होंने देवी वासु सिंह ग्रोवर रखा है, लेकिन

कर सकती हूं 'बोल्ड सीन' : टीना दत्ता

उनमें से एक में बोल्ड सीन है, इसलिए मैं वर्षमान में सोच रही हूं, या कि ये कितने रचनात्मक हैं या कितने बोल्ड हैं। मैं इनके साथ अति नहीं करना चाहती, मुझे

जाना होगा कि कहानी में इनकी आवश्यकता है या नहीं। जब तक उन्हें अच्छी तरह से शूट और चित्रित किया जाता है तब तक उन्हें करना चाहिए। इनके साथ प्रयोग करने की जरूरत ही रहती है। चरित्र या कहानी को उस दृश्य में मांग करनी चाहिए, इन्हें जरूर तरह आयी जाना चाहिए। यह एक जरूरत है कि वह अपने काम में बोल्ड दृश्यों की ओर आती है तो वह अपने लिए कोई सीमा तय नहीं करना चाहती लेकिन ऐसा बहुत सच में नहीं होता। उसने कहा, मैं जिन प्रोजेक्ट्स पर विचार कर रही हूं,



मैंने करियर की 2 सबसे बड़ी फिल्में सिद्धार्थ से शादी के बाद साइन की हैं : कियारा आडवाणी

कियारा आडवाणी ने सिद्धार्थ मल्होत्रा से शादी करने के बाद अपने करियर की ओर दोबारा बढ़ती बोलती की। उन्होंने बताया कि कैसे ऑडियोंस उनके मैरियर टेलर स्टेटस को एक्सेप्ट कर रही है।

कियारा आडवाणी ने एक इंटरव्यू के दोबारा रोने की ओर चाहती है। उन्होंने कहा कि उनके बारे में बड़ी बोलती बोलती हैं। अपने करियर की ओर चाहती है। अगर आप देखेंगे तो आज हमारी इंडस्ट्री में शादीशुदा एक्सेप्टेशन टॉप पर हैं। यह बात ही खुद बया करती है कि समय बदल चुका है। सच कहूं तो यह एक बहुत ही पॉटिंग चेंज है।

कियारा, रणवीर के स

मालदीव की पूर्व रक्षा मंत्री बोलीं: भारत हमेशा हमारा मददगार

कहा-हम यहां गलत वजहों से चर्चा में, पड़ोसियों से दोस्ती होना जरूरी

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। जाए, जो हमें मालदीव की पूर्व रक्षा मंत्री मारिया दीदी जंग में धकेल दे। ने कहा है कि मालदीव गलत वजहों से भारत और खासकर वहां के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर चर्चा है। मीडिया हाउस फर्ट्पोर्ट के डिफेंस समिट में मारिया ने कहा-हम लोग ऐसे नहीं हैं। हमें विदेशियों को बोलीं-हमारी पार्टी लगातार रिश्ते बेहतर कर रही थी।



पूर्व रक्षा मंत्री ने कहा- देश और क्षेत्र की भलाई के

लिए हमें पड़ोसी मालदीव की सरकार के दौरान देशों के साथ मालदीव की रक्षा मंत्री थीं। उन्होंने रिश्ता और दोस्ती बनाए रखना जरूरी है। इस बक्त मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद काहा-जलव्या परिवर्तन मालदीव के जब पूर्व रक्षा मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी मुझ्जू चीन के दौरे पर थे। उन्होंने चीन के अस्तित्व के लिए खतरा है। जब एशिया में सुनामी आई थी तब हमें कानां पड़ोसियों के साथ बेहतर संबंध बनाते थे। दिवकरों का सामान करना पड़ा था। उस दरअसल, 3 जनरी को पीएम मोदी मालदीव लॉटैने के बाद उन्होंने कहा था कि वक्त भारत पहला देश था जो हमारी लक्ष्यों के दौरे पर गए थे, जिसकी तस्वीरें कोई देश उन्हें धमका नहीं सकता है।

मालदीव की पूर्व रक्षा मंत्री ने एस्ट्रिक्शन में फंसा

टिप्पणी की थी।

सोशल मीडिया पर ट्रेंड हुआ बॉयकॉट मालदीव

भारत पर आ पत्त न कर रहा था। वहां, मालदीव में पिछले साल सबसे ज्यादा भारतीय पर्टटक गए थे, ये इस साल फरवरी तक पांचवें नंबर पर आ गए हैं।

इस साल 16,536 भारतीय ही मालदीव घूमने गए हैं। वहां फरवरी तक कुल पर्टटकों में भारतीय दूतावास ने कहा- 23 फरवरी के हालांकि मैं एक अपार्टमेंट में आग लग गई थी।

मालदीव की इकोनॉमी ट्रिजम ब्रेस्ट, भारत सभसे बड़ा हिस्सेदार

मालदीव ट्रेंड करने लगा था।

मालदीव की इकोनॉमी ट्रिजम पर डिपोर्ड करती है। वहां 70% नौकरियां ट्रिजम सेक्टर से पैदा होती हैं। इसमें 14% से 20%

इकमान भारत से होती है। जब पूरी दुनिया कोरोना माहामारी की वजह से तीव्रता तीर्ती से जूँझ रही थी, भारत के 63 हजार ट्रिजम हर साल करीब 20 लाख लोग घूमने जाते हैं। इनमें भारत से 2021 में 2.91 लाख, 2022 में 2.41 लाख और 2023 में 2.10 लाख ट्रिजम मालदीव गए।

में मालदीव में चीनी पर्टटकों की तादाद तीसरे नंबर पर थी। वहां, मालदीव में पिछले साल सबसे ज्यादा भारतीय पर्टटक गए थे, ये इस साल फरवरी तक पांचवें नंबर पर आ गए हैं।

भारतीय दूतावास ने रिवर्वर को इसकी जानकारी दी। भारतीय दूतावास ने कहा- 23 फरवरी के हालांकि मैं एक अपार्टमेंट में आग लग गई थी।

इसमें 27 साल के फाजिल खान

की मौत हो गई। हमें दुख है। हम उसके परिवार के संपर्क में हैं। उनका शब भारत पहुंचने के लिए हर संघर्ष मदद करने की कोशिश करेंगे। न्यूयॉर्क फायर डिपोर्डमेंट के मूलायिक, ई-बाइक में लगाने वाली लिथियम-आयन बैटरी की वजह से इमरात में आग लगी थी। 17 अन्य भवन हादरों में घायल हुए थे।

फाजिल ने 2020 में जर्नलिज्म की प्रार्थी पूरी की थी

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

एक दमकलकर्मी ने कहा- आग तेजी से फैल गई थी इसलिए लोग भाग नहीं पाए। कुछ लोगों को 5वीं जांच से कहते देखा गया। वो जान बचाने के लिए हर अनेकों द्वारा खिड़कियों से बाहू आने की कोशिश करेंगे। न्यूयॉर्क फायर डिपोर्डमेंट के मूलायिक, ई-बाइक में लगाने वाली लिथियम-आयन बैटरी की वजह से इमरात में आग लगी थी। 17 अन्य भवन हादरों में घायल हुए थे।

फाजिल ने 2020 में जर्नलिज्म की प्रार्थी पूरी की थी

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

दिल्ली के रहने वाले फाजिल ने 2020 में लिथियम-आयन बैटरी के कारण शहर में 267 आग लगने की था। उसके बाद से वे 'द हैंचेपर रिपोर्ट' में जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा था। 'द हैंचेपर रिपोर्ट' एक

अग्रसेन सकारी अर्बन बैंक की आमसभा संपन्न संपत्ति 617.76 करोड तक बढ़ी और एनपीए 0.51प्रतिशत घटा



हैदराबाद, 25 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। अग्रसेन सहकारी अर्बन बैंक की दूसरी आमसभा बैंक के आईएन सभागार में संपन्न हुई। जिसमें अध्यक्ष प्रोफे केडिया ने बैंक की व्यवस्था स्थिति के बारे में विचार से बोला और कहा की बैंक की कूल संपत्ति 617.76 करोड हो गई है और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

आमसभा में बैंक उपाध्यक्ष सीए नवान कुमार अग्रवाल, निदेशक विजयकुमार पिती, नरसिंग दास, ओमप्रसाद अग्रवाल, सुरेशकुमार अग्रवाल, नरायण दत्त, मोहन अग्रवाल, गोपाल चंद्र अग्रवाल, नरायण दत्त, मोहन अग्रवाल, महेशकुमार अग्रवाल, प्रमोदकुमार अग्रवाल, राजेशकुमार अग्रवाल, अंजू केडिया, अपूर्वा अग्रवाल, जनरल मैनेजर संसदी राव, डेव्हरी जनरल मैनेजर संसदी राव, अग्रवाल, शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

इस अवसर पर अध्यक्ष प्रेम

कूल के केडिया ने बोला की, देश की अर्थ व्यवस्था और रिजर्व बैंक के हाल ही में लिए गए कदम बैंक के विकास के लिए सकारात्मक है। जिसमें अध्यक्ष प्रोफे केडिया ने बैंक की व्यवस्था स्थिति के बारे में विचार से बोला और कहा की बैंक की कूल संपत्ति 617.76 करोड हो गई है और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

आमसभा में बैंक उपाध्यक्ष सीए नवान कुमार अग्रवाल, निदेशक विजयकुमार पिती, नरसिंग दास, ओमप्रसाद अग्रवाल, सुरेशकुमार अग्रवाल, नरायण दत्त, मोहन अग्रवाल, गोपाल चंद्र अग्रवाल, नरायण दत्त, मोहन अग्रवाल, महेशकुमार अग्रवाल, प्रमोदकुमार अग्रवाल, राजेशकुमार अग्रवाल, अंजू केडिया, अपूर्वा अग्रवाल, जनरल मैनेजर संसदी राव, डेव्हरी जनरल मैनेजर संसदी राव, अग्रवाल, शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने डिजिटल

बैंकिंग में भी पहल करते हुए डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बैंक और इंटरेट सक्षम सिस्टम, मोबाइल उपकरणों के मध्यम से एक स्वचालित पारंपरिक बैंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई है। इस मोड के मध्यम से, लगभग सभी व्यवसीय सेवाएं अपैर उपलब्ध हैं, जिसमें बैंक में आए विना आपके स्थान पर बैंक हुए छुड़वाएं भी शामिल हैं।

प्रमोद कुमार केडिया ने आगे कहा है, बैंक सफलतापूर्वक यूनिएड, आईएसपीएस, रुपे कार्ड, किंमेंट, पीओएस लातूर कर रहा है। आरटीजीएस/प्रॉफेक्टर, एनएसीच, ईसीएस, पीएमयूलीवाई, पीएमसीएम। मोबाइल बैंकिंग और इंटरेट बैंकिंग (कैबल देखें)। आदि। हमने ग्राहकों के लिए उनके ग्राहकों के व्यापार लेनदेन के लिए और अन्य कोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने डिजिटल

बिहार सहयोग समिति के केन्द्रीय समिति की बैठक संपन्न



हैदराबाद, 25 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। बिहार सहयोग समिति की तेलंगाना पर बैठक दूर्ग माता मंदिर, मलकाजीरी में बिनय कुमार यादव कि अध्यक्षता में संपन्न हुई।

प्रस विज्ञप्ति के अनुसार महासचिव मनोज यादव ने अध्यक्ष बिनय कुमार यादव, सचिव मनोज यादव, अनन्द गुप्ता, पक्षज यादव भात, प्रोग्राम इंचार्ज सुनील भगत, मनोज मंकर, दिपक यादव, हरीश यादव, ललन मिश्रा, कृष्ण ठाकुर, राम फल, बिनोद यादव एवं युवा सदस्यों ने भारी मात्रा लिया।

प्रमोद कुमार केडिया ने आगे कहा है, बैंक के उपरान्त विविध विवरण दिया है। 10 रुपये का सिक्का की जगह नोट देने को लेकर इन दिनों बाजार में नकली असली सिक्के में फर्क बताने वाले पोस्ट व्यापारियों के बीच अफवाह और फैला रहे हैं। हाल ये हैं कि सब्जी मंडी, ठेल, फल विक्रेताओं और यान विक्रेताओं ने 10 रुपये का सिक्का लेना बंद कर दिया है। 10 रुपये के सिक्के की जगह नोट देने को लेकर इन दिनों बाजार में नकली असली सिक्कों के फर्क को बताने वाले दुकानदारों और ग्राहकों के बीच बहस होती दिख रही है। 10 रुपये का सिक्का असली है या नकली, इस सदह के काणे दुकानदार इसे रखने लगे हैं। और दूसरी तरफ बैंक में 10 के नोट भी व्यापारियों को आरंभिकता नहीं रहती है। रिजर्व बैंक ने किसी में फर्क नहीं रहती है। व्यापारी 10 के नोट के लिए जब बैंक में जाते हैं तो बैंक के कर्मचारी रहते हैं कि

बैंकिंग में भी पहल करते हुए डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बैंक और इंटरेट सक्षम सिस्टम, मोबाइल उपकरणों के मध्यम से एक प्रशंसनीय बैंकिंग हुई।

इस साल भी अखंड अश्याम हरि कीतन कराने की रुप रेखा पेश की आनंद गुप्ता, पक्षज यादव ने अध्यक्ष विनय कुमार यादव कि अध्यक्षता में संपन्न हुई।

प्रस विज्ञप्ति के अनुसार महासचिव मनोज यादव ने अध्यक्ष बिनय कुमार यादव, सचिव मनोज यादव, अनन्द गुप्ता, पक्षज यादव भात, प्रोग्राम इंचार्ज सुनील भगत, मनोज मंकर, दिपक यादव, हरीश यादव, ललन मिश्रा, कृष्ण ठाकुर, राम फल, बिनोद यादव एवं युवा सदस्यों ने भारी मात्रा लिया।

हैदराबाद, 25 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। बिहार सहयोग समिति की तेलंगाना पर बैठक दूर्ग माता मंदिर, मलकाजीरी में फर्क बताने के लिए और अन्य कोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई। बैंक का निवेश 216.13 करोड से बड़कर 270.71 करोड हो गया। बैंक की कमाई संपत्ति 597.35 करोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने आगे कहा है, बैंक सफलतापूर्वक यूनिएड, आईएसपीएस, रुपे कार्ड, किंमेंट, पीओएस लातूर कर रहा है। आरटीजीएस/प्रॉफेक्टर, एनएसीच, ईसीएस, पीएमयूलीवाई, पीएमसीएम। मोबाइल बैंकिंग और इंटरेट बैंकिंग (कैबल देखें)। आदि। हमने ग्राहकों के लिए उनके ग्राहकों के व्यापार लेनदेन के लिए और अन्य कोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने डिजिटल

बैंकिंग में भी पहल करते हुए डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बैंक और इंटरेट सक्षम सिस्टम, मोबाइल उपकरणों के मध्यम से एक स्वचालित पारंपरिक बैंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई है। इस मोड के मध्यम से, लगभग सभी व्यवसीय सेवाएं अपैर उपलब्ध हैं, जिसमें बैंक में आए विना आपके स्थान पर बैंक हुए छुड़वाएं भी शामिल हैं।

हैदराबाद, 25 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। बिहार सहयोग समिति की तेलंगाना पर बैठक दूर्ग माता मंदिर, मलकाजीरी में फर्क बताने के लिए और अन्य कोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई। बैंक का निवेश 216.13 करोड से बड़कर 270.71 करोड हो गया। बैंक की कमाई संपत्ति 597.35 करोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने आगे कहा है, बैंक के उपरान्त विविध विवरण दिया है। 10 रुपये का सिक्का की जगह नोट देने को लेकर इन दिनों बाजार में नकली असली सिक्कों के फर्क को बताने वाले दुकानदारों और ग्राहकों के बीच बहस होती दिख रही है। 10 रुपये का सिक्का असली है या नकली, इस सदह के काणे दुकानदार इसे रखने लगे हैं। और दूसरी तरफ बैंक में 10 के नोट भी व्यापारियों को आरंभिकता नहीं रहती है। रिजर्व बैंक ने किसी में फर्क नहीं रहती है। व्यापारी 10 के नोट के लिए जब बैंक में जाते हैं तो बैंक के कर्मचारी रहते हैं कि

बैंकिंग में भी पहल करते हुए डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बैंक और इंटरेट सक्षम सिस्टम, मोबाइल उपकरणों के मध्यम से एक स्वचालित पारंपरिक बैंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई है। इस मोड के मध्यम से, लगभग सभी व्यवसीय सेवाएं अपैर उपलब्ध हैं, जिसमें बैंक में आए विना आपके स्थान पर बैंक हुए छुड़वाएं भी शामिल हैं।

हैदराबाद, 25 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। बिहार सहयोग समिति की तेलंगाना पर बैठक दूर्ग माता मंदिर, मलकाजीरी में फर्क बताने के लिए और अन्य कोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई। बैंक का निवेश 216.13 करोड से बड़कर 270.71 करोड हो गया। बैंक की कमाई संपत्ति 597.35 करोड से बड़कर 617.76 करोड हो गई और शुद्ध एनपीए 5.81% से घटकर 0.51% हो गया है।

उन्होंने कहा कि बैंक ने आगे कहा है, बैंक के उपरान्त विविध विवरण दिया है। 10 रुपये का सिक्का की जगह नोट देने को लेकर इन दिनों बाजार में नकली असली सिक्कों के फर्क को बताने वाले दुकानदारों और ग्राहकों के बीच बहस होती दिख रही है। 10 रुपये का सिक्का असली है या नकली, इस सदह के काणे दुकानदार इसे रखने लगे हैं। और दूसरी तरफ बैंक में 10 के नोट भी व्यापारियों को आरंभिकता नहीं रहती है। रिजर्व बैंक ने किसी में फर्क नहीं रहती है। व्यापारी 10 के नोट के लिए जब बैंक में जाते हैं तो बैंक के कर्मचारी रहते हैं कि

बैंकिंग में भी पहल करते हुए डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बैंक और इंटरेट सक्षम सिस्टम, मोबाइल उपकरणों के मध्यम से एक स्वचालित पारंपरिक बैंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई है। इस मोड के मध्यम से, लग

